प्रातःक्लास 28.2.68 ओमशांति पिताश्री

ओमशांति। रुहानी बाप बैठ रुहानी बच्चों से रूह–रुहान कर रहे हैं। इसको कहा जाता है रुहानी ज्ञान रूहों प्रति। रूह है ज्ञान का सागर। मनुष्य कब ज्ञान का सागर नहीं कहलाया जा सकता। मनुष्य है भक्ति का सागर। हैं तो सभी मनुष्य। जो ब्राह्मण बनते हैं उनकी भक्ति छूट जाती है। वह फिर .... सागर से ज्ञान सागर बन रहे हैं। फिर देवताओं में न भक्ति ,न ज्ञान ही होता है। देवताएं यह ज्ञान नहीं जानते हैं। ज्ञान का सागर एक ही परमपिता परमात्मा है इसलिए उनको ही हीरे जैसा कहेंगे। कौड़ी से हीरे जैसा या पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि वही बनाते हैं। मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं। देवताएं ही फिर आकर मनुष्य बने हैं। देवताएं बने हैं श्रीमत से आधा कल्प। वहां कोई की मत की दरकार नहीं रहती। यह सभी है आसुरी मत ;क्योंकि आसुरी राज्य है ना। यह भी उनको पता नहीं है। तुमको भी नहीं पता था। अभी बाप ने समझाया है। सदगुय की श्रीमत मिलती है। खालसे लोग भी कहते हैं सदगुरू अकाल। इसका अर्थ नहीं समझते हैं। और ही अनर्थ कर देते हें ;क्योंकि रावण बुद्धि हैं ना। पुकारते भी हैं सदगुरू अकाल मूर्त.....अर्थात् सदगति करने वाला अकालमूर्त है। अकालमूर्त परमपिता परमात्मा को ही कहा जाता है। सदगुरू और गुरू में रात–दिन का फर्क है। वह ब्रह्मा का दिन कर देते, वह रात कर देते। ब्रह्मा का दिन , ब्रह्मा की रात। तो जरूर कहेंगे ब्रह्मा पुनर्जन्म लेते हैं। ब्रह्मा सो यह देवता (विष्णु) बन जाते हैं। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। तम शिवबाबा की महिमा लिखते हो। उनका है हीरे जैसा जन्म। बाकी सभी का है कौड़ी मिसल। इस पर भी बिगरते हैं देवताओं के लिए तुम ऐसे कहते हो। (अरे), देवताएं यहां बैठे थोड़े ही हैं। उनको तो यह पता ही नहीं है कि देवताएं 84जन्म लेते2 पतित बन पड़े हैं। पतित की महिमा कब हो नहीं सकती है। पावन बने, पुजारी से पूज्य बने तब ही महिमा लायक हो। आधा कल्प पूज्य ,फिर पुजारी बन जाते हैं। अभी इन पुजारियों को पूज्य कौन बनावे? जैसे शंकराचार्य शिव की पूजा करते हैं तो पुजारी ठहरा ना। उनको पूज्य कौन बनावे? पूजा तो सभी करते हैं। गंगा स्नान करना भी पूजा ठहरी ना। अनेक प्रकार की पूजा करते है। मनुष्य ऐसे तो पत्थर बुद्धि बन गए हैं, जो समझते ही नहीं। पानी कैसे पावन बनावेंगे? जबकि पतित–पावन भगवान को ही कहा जाता है। सभी पुजारी हैं। खुद भी स्नान करते हैं, औरों को भी कराते हैं। झूठी महिमा हो गई है ना। अभी उन्हों का सामना करने वाला तो तुम्हारे सिवाय और कोई है नहीं। तुम गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए पावन बनते हो। पवित्र बन फिर यह ज्ञान धारण करना है। कुमारियों को तो कोई बंधन नहीं है। सिर्फ मां–बाप, बहिन–भाई की स्मृति रहेगी। फिर ससुर घर में जाने से दो परिवारों की याद हो जाती है। अभी बाप तुमको कहते हैं अशरीरी बनो। अभी सभी को वापस जाना है। तुमको पवित्र बनने की युक्ति भी बताता हूं। पतित–पावन मैं हूं ना। मैं गैरंटी करता हूं तुम मुझे याद करेंगे तो उस योगाग्नि से तुम्हारे जन्म जन्मांतर के पाप भस्म हो जावेंगे। जैसे पुराना सोना आग में डालने से उनसे खाद निकल जाती है। बाकी सच्चा सोना रह जाता है। यह भी योग अग्नि है। इस संगम पर ही बाप आकर राजयोग सिखलाते हैं। इसलिए इनकी बहुत महिमा है। राजयोग जो भगवान ने सिखाया था वह सभी सीखने चाहते हैं। विलायत से भी सन्यासी लोग पकड़ कर ले आते हैं। वह समझते हैं इन्होंने सन्यास किया हुआ है। अभी सन्यासी तो तुम हो ;परंतु हद के सन्यासी और बेहद के सन्यासी को जानते ही नहीं हैं। बेहद का सन्यास तो एक ही बाप सिखलाते हैं। तुम जानते हो यह पुरानी दुनियां ही खतम हो जानी है। इसलिए इस दुनियां के कोई भी चीज में रूची नहीं लगती है। फलानी ने शरीर छोड़ जाये दूसरा लिया पार्ट बजाने। फिर हम रोयें क्यों? मोह की रग निकल जाती है। हमारा सम्बंध जुटा है अब नई दुनियां से। वह ऐसे (प)क्के मस्तकलंकीधर होते हैं। तुम्हारे में राजाईपने की मस्ती है। बाबा में भी यह मस्ती है ना। यह कलंकीधर जाकर बनेंगे। फकीर से अमीर बनेंगे। अंदर में यह मस्त चढ़ी हुई है। इसलिए मस्त कलंकीधर कहते

हैं। इनका तो सा. भी करते हैं। तो जैसे कि इनकी मस्ती चढ़ी हुई है। तुमको भी चढ़नी चाहिए। तुम भी रुद्र माला में पिरोने वाले हो। जिनको पक्का निश्चय हो जाता है उनको नशा चढ़ेगा। हम आत्माओं को अब वापस जाना है घर। फिर नई दुनियां में आवेंगे। उसी निश्चय से इनको भी देखते हैं। तो उनको जैसे बच्चा देखने में आता है। कितना शोभनीक है। कृष्ण यहां है थोड़े ही। उनके पिछाड़ी कितना हैरान होते हैं। झूले बनाते , उनको दूध पिलाते हैं। वह तो आर्टीफिशियल जड़ चित्र। यह तो रीयल है ना। इनको भी यह पक्का निश्चय है हम बालक बनेंगे। तो बच्चों को भी बालक रूप देखने में आता है। वह भी दिव्य दृष्टि में देखते हैं। इन आंखों से देख न सके। आत्मा को दिव्य दृष्टि मिलती है। शरीर का भान नहीं रहता। उस समय अपन को महारानी और उनको बच्चा समझेंगे। यह सा. भी इस समय बहुतों को होता है। सफेद पोशधारी का भी बहुतों को सा. होता है। फिर उनको कहते हैं तुम इनके पास जाओ, ज्ञान लो तो ऐसा स्वर्ग का प्रिंस बनेंगे। तो यह जादूगरी ठहरी ना। सौदा भी बहुत अच्छा करते हैं। कौड़ी लेकर हीरे देते हैं। हीरे जैसा तुम बनते हो। शिवबाबा तुमको हीरे जैसा बनाते हैं। इसलिए बलिहारी उनकी है। मनुष्य न समझने कारण जादू2 कह रड़ियां मारते रहते हैं। जो आश्चर्यवत भागन्ती हो जाते हैं वह जाकर उल्टा–सुल्टा सुनाते हैं। यहां यह2 होता है... .....वास्तव में यह सिर्फ बहलाने की बातें। इनमें और कुद है नहीं। ऐसे बहुत ट्रेटर बन पड़ते हैं। ऐसे ट्रेटर बनने वाले उंच पद थोड़े ही पा सकते हैं। इसको कहा जाता है सदगुरू के निंदक ठौर न पाये। उन गुरुओं पास तो कोई एमऑब्जेक्ट है नहीं। बहुत माइयां जाकर दंतकथा सुनती हैं। माइयों को भी सिखाते हैं। जो फिर कुछ मिलता है आपस में हिस्सा कर देते हैं। बहुत कापी करते हैं। और बहुत कापी करेंगे। तुम देखना कितनी ब्रह्माकुमारियां बन जाती हैं। फायदा कुछ भी नहीं। शिवबाबा तो यहां है ना। कौड़ी बदले हीरे देना यह तो बाप ही का काम है। बाकी सभी ठग लेते हैं। पैसा लेकर खा जाते हैं और ही तमोप्रधान बन जाते हैं। यहां तो सत्य बाप है ना। यह भी अभी तुम समझते हो। मनुष्य तो कह देते हैं वह तो युगे2 आते हैं। अच्छा वह भी 4/5युग है। फिर 24अवतार, ...अवतार कैसे कहते हो। फिर कह देते ठिक्कर–भित्तर कण2 में परमात्मा है। तो सभी अवतार हो गए। मनुष्य तमोप्रधान बन जाते हैं तो उल्टी ही बातें सुनाते रहते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। बाप कहते है मैं कौड़ी से हीरे जैसा बनाने वाला, मुझे फिर ठिक्कर–भित्तर में ,कण2 में कह देते हैं। खुद अपने लिए 84जन्म कहते हैं। मुझे फिर अनगिनत में डाल दिया है। भारतवासी ही तमोप्रधान बनने कारण ठिक्कर–भित्तर में कह देते हैं। सर्वव्यापी हैं तो गोया कखपन आदि सबमें आ जाते हैं। फिर तो कोई वैल्यु ही नहीं रही। मेरे उपर कितना उपकार करते हैं। इसलिए उन्हों को जंगली कांटा, पत्थरबुद्धि ,आसुर यह सब बाप ने नाम दे रखे हैं। जब ऐसे बन जाते हैं तो फिर बाप आकर यह बनाते हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी जरूर रिपीट होगी। सतयुग (में) फिर यह ल0ना0 ही आवेंगे। वहां सिर्फ भारत ही होता है। शुरू2 में बहुत थोड़े देवताएं होते हैं। फिर वृद्धि को पाते 5000वर्ष में कितने हो गए हैं। अभी यह ज्ञान और कोई की बुद्धि में नहीं है। बाकी है भक्ति। देवताओं के चित्रों की महिमा गाते हैं। यह नहीं समझते कि चैतन्य में थे। फिर कहां गए? चित्रों की पूजा तो करते हैं ;परंतु वह हैं कहां? उनको भी तमोप्रधान फिर सतोप्रधान बनना है। ऐसे तमोप्रधान बुद्धि को सतोप्रधान बनाना बाप का ही काम है। यह ल0ना0 पास्ट हो गए हैं इसलिए उनकी महिमा गाते हैं। उंच ते उंच एक भगवान ही है। बाकी तो सभी पुनर्जन्म लेते ही रहते हैं। बाप ही सबको मुक्ति–जीवनमुक्ति देते हैं। वह न आते वर्थ नॉट अपेनी तमोप्रधान बन पड़ते। यह जब राज्य करते थे तो वर्थ पाउंड थे। वहां कोई पूजा आदि नहीं करते थे। वह फिर पुजारी बन गए हैं। जो सम्पूर्ण निर्विकारी थे वही सम्पूर्ण विकारी बन गए हैं। आत्मा ही पतित बनती है। यह बातें तुम ब्राह्मणों में भी नम्बरवार ही जानते हैं। खुद ही पूरा समझा न होगा तो औरों को क्या समझावेंगे? नाम होगा ब्रह्मा

कुमारियां समझा न सकीं। नुकसान कर देते हैं। इसलिए ही बाप कहते हैं जो समझते हैं हम नहीं समझा सकते हैं तो बोलना न चाहिए। हम अपनी बहिन को कहते हैं वह आपको आकर समझावेंगी। भारत हीरे जैसा था ,अभी कौड़ी मिसल है। बेगर भारत को फिर सिरताज कौन बनावेंगे? ल0ना0 अभी कहां हैं वह तो हिसाब बताओ। बता न सकेंगे। वह हैं ही भक्ति के सागर। नशा चढ़ा हुआ है। तुम हो ज्ञान के सागर। वह शास्त्रों को ही ज्ञान समझते हैं। बाप कहते हैं शास्त्रों में है भक्ति की रसम–रिवाज। (खांसी हुई) यह यभी निशानी है ना अजन कर्मभोग है। अजन पुरुषार्थ करना है। जितना यह जोर पड़ता जावेगा उतनी कशिश होगी। अभी नहीं है। फिर यथा योग तथा शक्ति। जितना बाप को याद करते हैं ऐसे भी नहीं कि सदैव याद ही करते हैं। फिर तो यह शरीर भी न रहे। अभी तो अजन बहुतों को पैगाम देना है। पैगम्बर बनना है। तुम बाप के बच्चे पैगम्बर बनते हो। और कोई नहीं बनते। क्राइस्ट आदि वह तो सिर्फ आकर धर्म स्थापन करते हैं। उनको पैगम्बर मैसेंजर नहीं कहा जाता। क्रिश्चियन धर्म स्थापन किया। वह किसके शरीर में आया? फिर उसके पिछाड़ी दूसरे आते गए। यहां तो यह राजधानी स्थापन हो रही है। आगे चल तुमको सब सा. होगा क्या2 बनेंगे। यह भी हमने विकर्म किया है। सा. होने में कोई देरी नहीं लगती है। काशी कलवट खाते हैं ना। एकदम खड़ा होकर कुएं में कूद पड़ते हैं। अभी गवर्मेंट ने बंद कर दी है। वह समझते हैं मुक्ति को पावेंगे। बाप कहते हैं मुक्ति तो कोई पा न सके। थोड़े समय में जैसे सभी जन्मों का दंड मिल जाता है। फिर नये सिरे हिसाब शुरू होता है। वापस तो कोई भी जा न सके। कहां जाकर रहेंगे? सिजरा ही बिगर जाये। नम्बरवार आवेंगे फिर जावेंगे। बच्चों को सा. होती है तब तो चित्र आदि बनाते हैं। 84जन्मों की,सारी सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का ज्ञान तुमको मिलता है। फिर तुम्हारे में नम्बरवार तो हैं ही। कोई बहुत मार्क्स से पास होते हैं,कोई कम। 100मार्क्स तो होती ही नहीं है। 100 है ही बाप की। ऐसा तो कोई बन न सके। आत्मा सभी कितनी छोटी बिंदी हैं। मनुष्य कितने बड़े हैं। एक न मिले दूसरे से। जितनी आत्माएं हैं उतनी ही फिर होंगी। तब तो वहां घर में रहेंगे। यह भी ड्रामा बना हुआ है। इसमें कुछ भी फर्क नहीं हो सकता। एक बार जो शूटिंग हुई वहीं फिर देखेंगे। अभी बाबा बैठे हैं तो सम्मुख एक्सप्रेशन देखते हो। फिर भी 5000वर्ष बाद ऐसे ही देखेंगे। तुम कहेंगे 5000वर्ष पहले भी ऐसे मिले थे। एक सेकेंड भी कम जास्ती नहीं हो सकता। ड्रामा है ना। जिसको यह रचता और रचना ज्ञान बुद्धि में है उनको कहा जाता है स्वदर्शन चक्रधारी। बाप से ही यह नालेज मिलती है। मनुष्य मनुष्य को ज्ञान दे न सके। भक्ति सिखला न सके। ज्ञान का सागर तो एक ही है। फिर ज्ञान नदियां तुम बनते हो। ज्ञान सागर और ज्ञान नदियों से मुक्ति–जीवनमुक्ति मिलती है। वह तो हैं पानी की। पानी तो सदैव है ही। ज्ञान मिलता है संगम पर। पानी की नदियां तो भारत में हैं ही। बाकी तो इतने सब शहर ही खतम हो जाते हैं। खंड ही नहीं रहता। बरसात तो पड़ती होगी ना। पानी पानी में जाकर पड़ेगा। यही भारत होगा। अभी तुमको नालेज मिलती है। भक्ति से दुर्गति ,ज्ञान से सदगति होती है। 84जन्म लेते2 दुर्गति हो गई है। अभी फिर कौन करे? हीरे जैसा एक ही शिवबाबा है, जिसकी जयंती मनाई जाती है। पूछना चाहिए शिवबाबा ने क्या किया? वह तो आकर पतितों को पावन बनाते हैं। आदि,मध्य,अंत का ज्ञान सुनाते हैं। मनुष्य तो नेति2 कह देते हैं। अभी तुम जानते हो वह सब मूर्ख हैं। रचता बाप को नहीं जानते। तुम कहेंगे हम जानते हैं ....है अंधियारा। तब ही गाया जाता है ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात। अपने 84जन्मों की कहानी को तो मालूम होना चाहिए ना। तुम समझते हो हमारे 84जन्म पूरे हुए हैं। अभी बाप को याद करने पावन बन जावेंगे। वहां शरीर भी पावन मिलेगा। तुम ही नम्बरवन पावन, नम्बरवन पतित बनते हो। मुख्य बात है ही याद की। कई को याद करने ही नहीं आता। अपन को आत्मा समझ बाप को कैसे याद करें? फिर बच्चे हैं तो स्वर्ग में आवेंगे। इस समय के पुरुषार्थ से ही राजाई बनती है। अच्छा, मीठे2 बच्चों को बापदादा का यादप्यार ,गुडमार्निंग।